# भगवत कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष-18, अंक-2<br>सोमवार, 26.2.95 | सम्पादक : प्रभाकर राव<br>फरवरी, 1995 | वार्षिक चन्दा-50.00<br>प्रति अंक : 5.00 |


## ''अलविदा !..... हे बा !..... अमर रहो !''

पिछली 'भगवत कृपा' में आप सभी ने प.पू. बा के शरीर छोड़ने का दुःखद समाचार पढ़ा ही होगा..... प.पू. बा ने जो अद्‌भुत जीवन जीया उसकी अपनी सीमित दृष्टि-लेखनी से एक झांकी प्रस्तुत करने की यहां सिर्फ चेष्टा ही है.... क्योंकि चिदाकाश को शब्दों द्वारा समेट नहीं सकते। प.पू. बा एक ऐसी ज्योति थी जो स्वयं जीकर साधना पथ पर हमारे भीतर में शाश्वत उजाला कर गई। जीवन की अंतिम सांस तक गुरुभक्ति अदा करने वे पीछे नहीं रही....गुरुहरि योगीजी महाराज ने 23 जनवरी 1971 को शरीर छोड़ा था–पू.बा. ने भी उसी मास को चुना.... साथ ही दो दिन पहले ही विदा होकर वे स्वामीसेवकभाव भी चूकी नहीं !

सेवा, शूरवीरता, अडिग निष्ठा व माहात्य का स्वरूप पू. बा गए? नहीं-नहीं ! सच्चाई को जानते हुए भी हृदय से यह आवाज़ आती है कि अभी अपने कमरे में बैठी होंगी और ममता भरा स्पर्श देकर भीतर जलती ज्वाला पर शीतलता का धोध बहाकर हृदय को शांत कर देंगी..... पू. बा हमें छोड़कर भला कहीं जा कैसे सकती हैं? क्योंकि पू. बा तो गुणातीत समाज के हर एक मुक्त के रोम-रोम में व्याप्त-चिरंजीव हैं..... सदैव चिरंजीव रहेंगी.....

'माँ-बा'–शब्द की गरिमा ही कुछ और है ! एक कहानी सुनी थी..... एक लड़के को एक लड़की से प्यार हो गया..... लड़की ने प्यार की थाह पाने के लिए लड़के को कहा कि तुम्हें यदि मुझ से प्रेम है, तो तुम मुझे अपनी माँ का दिल निकाल कर ला दो..... लड़का तो लड़की के प्यार में अंधा हुआ था ही। उसने घर जाकर अपनी माँ की हत्या कर दी और दिल निकाल कर हाथ में लिए लड़की के पास जाने निकला। रास्ते में कुछ ठोकर लगी और वह गिर पड़ा। दिल भी हाथ में से फिसल गया..... पर गिरते ही उस दिल में से आवाज निकली कि बेटा तुम्हें चोट तो नहीं लगी? यह है दुन्यवी माँ की ममता की गरिमा ! तो ऐसी करोड़ों माँ की ममता को फीकी कर दे ऐसी चैतन्यजननी 'बा' की ममता की थाह तो हम कैसे लगा पायेंगे? हमने तो देखा भी है कि हम उनके कहे मुताबिक वर्तें या नहीं वर्तें....पर उन्होंने स्वयं धूप सह कर अपनी ममता की शीतल छांव हम सब पर सदैव रखी। **89 साल की उम्र में पू. गुरुजी को दर्शन देकर- प्रसन्न करने बैसाख की दोपहर को कड़ी धूप में ज्योत के गेट पर आधे घंटे तक बैठे रहती उसकी ममता सच में अकल्पनीय है।**

इससे भी अधिक 15-17 साल की आयु से पू. बा

ने साधना शुरु की और बदलते युग की नई पीढ़ी के 20 साल की आयु के मुक्त के साथ भी वे एडजेस्ट हो गई....सच ! कैसा विशाल हृदय पाया होगा पू. बा ने.....

21 जनवरी की सुबह 10.15 पर प.पू. बा का वह द्वितीय तत्त्व स्थूलरुप से विदाई लेकर अक्षरधाम में गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज व प.पू.काकाजी महाराज के समीप जाकर बैठ गया ! पिछले पन्द्रह दिन से प. पू. बा को पांव में तकलीफ शुरु हुई थी.....पांव में ठीक से रक्त का संचार नहीं हो रहा था। गुणातीत ज्योत की डॉक्टरानियों ने अपनी ओर से होम्योपैथिक दवा देनी शुरु की और निरन्तर भजन चालू रखा.... तबियत में थोड़ा सुधार भी हुआ लेकिन फिर दोबारा पांव में दर्द बढ़ने लगा.....बम्बई के डा. महेन्द्र मर्चंट व ज्योत की डा.बहनों ने पू. बा को बम्बई ले जाने का आग्रह किया..... पू. बा को तो ज्योत छोड़कर जाना ही नहीं था, पर सभी के- खासकर प. पू. साहेब व पू. डा. महेन्द्र मर्चंट के आग्रह पर 17 जनवरी को बम्बई जाने पू. बा ने आखिरकार हाँ करी। वहां नाणावटी अस्पताल में डा. ने एन्जयोग्राफी कराने की सलाह दी.... प. पू. पप्पाजी, प.पू. साहेब भी यह समाचार मिलते ही बम्बई पहुँच गए। एन्ज्योग्राफी से ऐसा निदान हुआ कि इस उम्र में सर्जरी करना तो जाईज नहीं है, पर दवाओं से ठीक तो हो जायेगा और थोड़ा अच्छा भी होने लगा था.....

बम्बई के भक्तों का समुदाय तो जैसे पू. बा के अस्पताल पहुँचते ही भावविभोर होकर दर्शन करने उमड़ पड़ा था। पू. ज्योति बहन के शब्दों में- **ऐसा लगता था कि पू. बा अपनी कर्मभूमि बम्बई के पुराने भक्तों को दर्शन व सेवा का लाभ देकर मिलने ही गए हों।** 21 जनवरी की सुबह तो प. पू. पप्पाजी व पू. बा आपस में मिले भी ! और...प. पू. पप्पाजी के अस्पताल से निकलने के पाँच मिनट बाद ही पू. बा ने स्वतंत्र रूप से देह का त्याग कर दिया। थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया पर वास्तविकता से हम कैसे मुँह मोड़ लें? उसे किसी भी तरह स्वीकारे बिना और कोई चारा भी तो नहीं था।

प. पू. बा के पार्थिव शरीर को सभी मुक्तों को दर्शन कराने पहले बोरीवली ले गए। सारे बम्बई मंडल को दर्शन हुआ। शाम को बम्बई से पू. बा को विद्यानगर ले आने कारवां रवाना हुआ। सुबह करीब 7.30 बजे विद्यानगर ज्योत के प्रांगण में पू. बा के पार्थिव शरीर ने प्रवेश करा.....बहनों ने भक्तिभाव से फूलों से सुशोभित अक्षरदेरी बनाई थी। पू. बा को पालकी में विराजमान किए ! सर्वप्रथम प. पू. पप्पाजी ने पू. बा का पूजन किया और फूल का रिंग चरणों में अर्पण किया। तत्पश्चात् बहनों, युवकों, गृहस्थों ने पूजन किया....फिर पू. बा की पालकी को लेकर गुणातीत ज्योत व प्रभुकृपा की परिक्रमा करा के ब्रह्मज्योति ले गये.....ब्रह्मज्योति पर प. पू. साहेब, भाईयों, गृहस्थों ने पू. बा की पुष्प पूजन विधि व आरती की।

स्वामिनारायण मंत्र की धून्य करते-करते पू. बा की पालकी को परिमल, मंदिर, सोनामृत की परिक्रमा कराते हुए प. पू. काकाजी के समाधि स्थान की ओर ले गये..... प.पू. बा ने यहां भी पू. काकाजी के सान्निध्य में रहना ही पंसद किया। कैसी कल्पना से परे की गुरुभक्ति और अजोड़ स्वरूपनिष्ठा।

'सोना बा अमर रहो'-ब्रह्मनाद और आंसुओं से छलकता आंखों के साथ पू. बा की अंतिम संस्कार विधि प. पू. साहेब, पू. घनश्यामभाई अमीन, पू. रजनीभाई, पू. प्रफुल्लभाई व पू. दिलीपभाई के वरद् हस्तों हुई.....देखते ही देखते वह पंचभूत का शरीर चिदाकाश में विलीन हो गया। करोड़ों वंदन हो चैतन्य जननी को.....

सच ! आज जो गुणातीत समाज हम देख रहे हैं वह प. पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और पू. बा का आध्यात्मिक कुटुंब जो विस्तृत हुआ है- वह समाज है। जैसा कि पू. गुरुजी ने एक बार बताया था कि 1966 में जब हम सोखड़ा आए तब शुरूआत में सुना था कि- एक ही कुटुंब शुरूआत में आकर यहां बसा था और समय के बीतते वह परिवार जो फल-फूल कर बढ़ता गया वह यह सोखड़ा गांव। **यूं आज का गुणातीत समाज पू. काकाजी, पू. पप्पाजी और पू. बा का विस्तृत हुआ एक आध्यात्मिक परिवार है, यह हम भूलें नहीं।**

पू. बा को गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रति भगवान का भाव हुआ और जीवन का मुख्य केन्द्र ही

वे बन गये। अपने इकलौते बेटे पू. कातिकाका के जीव में बचपन से ही सत्संग की सेवा व माहात्म्य के संस्कारों का पू. बा ने अद्‌भुत सिंचन किया.....और गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने पू. कांतिकाका को आज्ञा करी– **'तू और दादु भाई- भाई होकर रहना, ब्रह्मांड डोला दोगे.....।'** इस दौरान प.पू. पप्पाजी भी अफ्रीका से भारत आ गये और गुरुदेव के इस वचन को अघ्घर झेल कर इन दोनों परिवारों ने मिलकर केवल संबंध का माहात्म्य वाली सेवा- भक्ति की शुरूआत करी..... यूं- **ऐसे दृढ़ सत्संगी वैष्णव वही हमारे सच्चे सगे संबंधी हैं और वही हमारी जाति है और इस देह में रहें तब तक ऐसे वैष्णव सत्संगीयों के साथ ही हमें रहना है।** वच अत्यं प्र-21 में भगवान स्वामिनारायण द्वारा बताई इस कुटुंब भावना की इन दो परिवारों ने प. पू. काकाजी प.पू. पप्पाजी व प.पू. बा की निश्रा में शुरुआत की। इसी का फला-फूला आज यह गुणातीत समाज है। भयंकर देशकाल भी आए.....सत्संग में ज्वारभाटे भी खूब आए फिर भी सालों तक दोंनो परिवारों की एक ही जगह रसोई बनी.....'आत्मीयता' कहने मात्र ही नहीं, बल्कि सब कुछ बाजु में रखकर प्रगट प्रभु की दृढ़ निष्ठा से संत की निश्रा में सत्संगी को ही सच्चे संबंधी मानकर वर्तन में भी आयी.....और उसी के फलस्वरूप आज जिस आत्मीय समाज का हम नारा लगाते हैं वह स्थापित हो पाया है। देखा जाए तो हम तो आज इन तीनों द्वारा तैयार करके परोसी थाली पर खाना खाने बैठे हैं.....

सो पू. बा यानि- नींव की ईट.....जिस पर आज चारों पंखुडियाँ- गृहस्थों, युवकों, संतों, बहनों का महामानव के भव्य- दिव्य गुणातीत समाज की आलीशान इमारत आज उन्नति के शिखर पर दिखाई पड़ रही है। पू. बा स्वयं तो नींव की ईंट बने ही साथ ही प्रत्येक चैतन्य की प्रगट की निष्ठा में भी पू. बा हैं।

पू. बा ने अपने जीवन की प्रत्येक पल गुणातीत स्वरूपों के संबंधवालों के लिए बिताई - कोई भी भक्त के बम्बई जाने बारे पता चले, तो गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगिजी महाराज सर्वप्रथम पू. बा का ही घर याद करें..... कैंसर, टी.बी के मरीजों को बम्बई में डाक्टरों को दिखाने जाना हो तब भी पू. बा के घर पर ही रहने की पसंदगी उतरे..... पू. बा भी गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज के भाव से ही बीमार भक्तों की..... Vomit Latrine तक उठाने की सेवा करते। हम ऐसी सेवा की कल्पना भी न कर पायेंगे ! मेरे-तेरे का सीमितभाव नहीं...केवल गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज का संबंध व स्परूप के प्रति अनन्यभाव.....भक्तों के प्रति वात्सल्यभाव !

पू. बा के पास जाने - अनजाने कोई भी जाता..... उसकी चित्तपट्टी पर वे अपना अधिकार कर लेती.....हर एक को लगता **'बा मेरी विशेष है।'** पू. बा के वात्सल्य को जीवनभर नहीं भूल पाता.....पू. बा के प्रेम को लेकर स्व का भाव तक छोड़ने सब तैयार हो जाते.... पू. गुरुजी भी तो पू. बा के पास साधु होने मना नहीं कर पाये यह हम जानते हैं। जहां पू. बा पहुँचे वहां वातावरण में अपने आप चेतना आ जाती....शुष्कता टल जाती और सहज आनंदसभर वातावरण बन जाता।

पू. बा हर एक के लिए एक stopgap substitue की तरह हमेशा वर्ते। जिसे जो व्यक्ति, पदार्थ, गुण या वृत्ति भगवान भजने में - भगवान के साथ जुड़ने में अड़ता हो वहां पू. बा बैठ जाते। फिर वह वृत्ति, व्यक्ति, गुण या पदार्थ का आकर्षण गौण हो जाता और उसकी जगह पू. बा ले लेते। उनके संबंध में आये हर एक को यह अनुभव हुआ ही होगा। यूं उसे असाधारण प्रीति करा करके दूसरा सब कुछ गौण करा कर स्वयं खींच कर हर एक को गुरुहरि योगीजी महाराज, प. पू. काकाजी या प. पू. पप्पाजी में जोड़ देते। उन्होंने किसी को भी स्वयं में नहीं जोड़ा। साधु का यह विशिष्ट लक्षण है। गुरुस्थान पर होते हुए, लाखों द्वारा भगवान के भाव से पूजे जाने पर भी समग्र जीवन एक सामान्य सेविका की अदा से ही वे जीयीं..... खुद की consciousness ही नहीं, सहजावस्था–केवल निरपेक्ष समपर्ण ! गुणातीत समाज के एक- एक मुक्त को पू. बा ने प्रार्थना करके प्रेरणा-बल दिया....साधकों के रास्ते में आने वाली अनेक प्रकार की उदासियों, कठिनाईयों, स्वभाव-प्रकृति के ताडंव से परेशान उदास होते साधकों

को मार्गदर्शन दिया..... गृहस्थों को जीवन की बैलगाड़ी कैसे चलानी उस हेतु आध्यात्मिक सूझ के साथ-साथ व्यवाहारिक सूझ भी दी....पू. बा का जीवन गुणातीत समाज के हर एक मुक्त के लिए युगों-युगों तक पथ प्रदर्शन देता रहेगा.....पू. बा का ऋण हम कैसे चुका भी पायेंगे ?

अभी हम जिस ज्ञान–स्वरूपज्ञान को समझते हैं, वर्त तो अभी भी नहीं सकते होंगे, फिर भी वह ज्ञान-गुणातीत ज्ञान के जो सूत्रों हृदय में भरे हैं - वे सूत्र, वह ज्ञान हमें कितना ठोक-ठोक कर कहना पड़ा है ? और तब भी खूब संयम से वर्तने पर स्वयं पर काबु रखने पर फिलहाल तो उस तरह वर्तने की एक दिशामात्र ही हमें मिल पाई है। जबकि पू. बा को तो यह सब सहज ही था। मानो-यह उनकी जीवनपद्धति ही थी। जैसे कि पू. काकाजी से हमने कई बार सुना हैं -'Surrender is not submission, its a consciousness' पू. बा में यह सहज दिखाई देता। उन्होंने दिखावा नहीं करा या हमारी तरह मन को समझाना भी नहीं पड़ा कि - हे मन तू शास्त्रीजी महाराज का है - उनकी मर्जी के मुताबिक वर्त - उनके कहे में वर्त। उन्हें ख्याल नहीं रखना पड़ा कि अब मेरा सब कुछ शास्त्रीजी महाराज का है। सहज ही जीव ने माना कि मैं उनकी उनका प्रकाश। और तब से लेकर अंतिम सांस तक वे सहज उसी consciousness में जीयीं। यूं वे सच में साधु थीं और इसलिए ही उनको सचोट विश्वास था कि मेरी पल पल की क्रिया भक्तिरूप ही है। उन्हें हमारी तरह checking नहीं करनी पड़ती थी। सो ही 'भगवान सबका-विरोध करने वाले का भी भला करें'-गुरुहरि योगीजी महाराज की यह भावना का मूर्तस्वरूप थीं पू. बा !

इसी कारण पू. बा को हर एक के प्रति प्रभु का ही भाव! गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का ही भाव ! पू. बा की इस गरिमा को हम तोते की तरह बोल जरुर जायेगें, परन्तु जब तक पू. बा की सहजावस्था में नहीं पहुँचेगें तब तक शायद ही समझ सकेंगे। हॉ पू. ज्योती बहन जैसा कोई समझ सकता है-पू. बा की यह विशेषता। सच में पू.बा की यह एक अनुपम विशेषता ही थी !

और इसी कारण ही तो जैसा उन्हें गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रति भाव- ऐसा ही गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति भाव बैठा और ऐसे का ऐसा भाव पू. काकाजी और पू. पप्पाजी में भी हुआ ! बहुत मुशकिल चीज है यह । हॉ प्रगट का ज्ञान हमारे भीतर में हे, सो तत्त्व से प्रगटपन हम मान लेंगे परन्तु वही भाव हमें हमारे समकक्ष में या अपने से छोटे के प्रति है ऐसा नहीं कह सकेंगे। जबकि उस स्वरुप के प्रति वैसा ही भाव हो यही प्रभु को तत्त्व से पहचाना कहलाए ! इस रुप में पू. बा ने सच में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज को तत्त्व से पहचाना !

और..... अंतिम सॉस तक प. पू. पप्पाजी में वही गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का भाव रखते हुए अपनी दौड़, सुरुचि रखी जिसका निम्न प्रंसग से पता चलता है-

विद्यानगर में Feb.... 94 में प. पू. पप्पाजी ने 'स्वरुपलयता' मौन जपयज्ञ शिविर रखवाई थी। शिविर की पूर्णाहुति की सभा में ऐसा आयोजन था कि गुणातीत ज्योत में जिस बहन का नाम स अक्षर से शुरु होता हो वह प.पू. पप्पाजी को कलगी अर्पण करेगी। पू. बा अपने कमरे में ही थे.....स्पीकर पर जैसे ही पू. बा ने यह सुना तो तुरन्त बोली कि - 'चलो मेरा नाम आयेगा।' यूं कहकर फटाफट भावभरे हृदय से सभा में पहुँच कर प. पू. पप्पाजी को कलगी अर्पण करी।

88 साल की उस उम्र में भी प्रत्यक्ष प्रभु की भक्ति अदा करने की कैसी उमंग ! असल में ऐसे स्वरूप स्वयं जीकर हमारे लिए आदर्श रखते हैं कि यूं उमंग से दौड़ना चाहिए। अगर प्रत्यक्ष प्रभु की ओर निरंतर अपनी ऐसी दौड़–निगाह रहे तो अशक्य वस्तु भी शक्य बन सकती है।

दूसरी ओर.....हम समझते हैं कि हमें स्वरूप से प्रीति है पर असल में स्वरूप हमसे कई गुणा प्रीति रखते हैं.....निम्न प्रसंग से यह तथ्य उभर आता है-

पिछले साल दिसम्बर में प. पू. पप्पाजी, पू. बा, पू. ज्योतिबहन वगैरह पू. निर्मलस्वामिजी के समढियाला मंदिर गए थे....तो वहां जब पू. बा को आशीष प्रदान करने कहा तो पू. बा प्रवचन शुरु करते

हुए बोले - 'यह मुकुंद को तो साधु बनना ही नहीं था, दिल्ली भी आना नहीं था.....'

यह सुनकर साथ में बैठे प. पू. पप्पाजी ने पू. बा को याद कराते हुए कहा कि 'बा हम दिल्ली में नहीं - समढियाला में बैठे हैं....'

प. पू. पप्पाजी ने जब यह बात पू. गुरुजी को बताई तो पू. गुरुजी की आंखों में पानी आ गया कि सचमुच स्वामी की बातों में जो लिखा है कि स्वरूपों से हमें जो प्रीति है उससे कई गुणा अधिक प्रीति स्वरूप को हम से है–यह सच है।

पू. बा को किस - किस रूप में हम निहार पायेंगे ?

एक सेविका के रूप में,
एक साधक के रूप में,
एक माँ के रूप में,
एक आदर्श पथप्रदर्शक के रूप में,
एक गुरु के रूप में,
एक स्वरूप के रूप में।

दरअसल तो पू.बा हर एक को अपने - अपने ढंग से खूब स्पर्श कर गए। जिसका संक्षिप्त में विवरण दें तो इस प्रकार करा जा सकता है....

- ✡ सब की चिंता करा करे–खबर रखा करे वे बा।
- ✡ हमारे लिए भगवान के साथ भी लड़े - बा।
- ✡ इन लड़कियों - लड़कों को उदास न होने देना, सभी को सुख चैन से आगे ले जाना यूं पू. पप्पाजी को हकदावे से कहते हुए कईयों ने उनको देखा होगा।
- ✡ हमारी गाड़ी पंक्चर हो गई हो हम डूबे हुए हों, निराश होकर बैठ गए हों तब–
- ✡ बल पाने का injection हीं नहीं–intravenous injection यानि बा !
- ✡ बा यानि नंबर बिना की गाड़ी !
- ✡ उन्हें स्त्री - पुरुष भाव ही नहीं।
- ✡ बा यूं खूब बुद्धिशाली-
- ✡ उनकी बुद्धि - स्वरूपलक्षी भावात्मक बुद्धि !
- ✡ हर एक छोटे बड़े प्रसंग पर–भजन का ही आधार ले और लेना सिखाए वह बा !

तो हे बा ! आपने इस गुणातीत समाज की नींव में अपने आपको याहोम कर दिया और हमें तो माथे के मुकुट की तरह रखा। आपने हमारे लिए निरंतर प्रार्थना - भजन किया और अपनी वात्सल्यभरी छांव में हमें गुणातीत स्वरूपों को पहचानने की दृष्टि देने अत्यधिक परिश्रम किया। तो अब - प्रत्यक्ष स्वरूपों व आपकी खूब शोभा बढ़ाये यही आपके चरणों में प्रार्थना.....और हमारे वर्तन से हम पू. बा को अमर कर दें व उन्हें प्रत्यक्ष कर लें यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

✡✡✡✡✡

# अनिर्देश की गतिविधियाँ

**'कुछ नया करके दिखाना है.....'**

1964- 1965 में गुरुहरि योगीजी महाराज अक्सर कहा करते थे - **'कुछ नया करके दिखाना है।'** 51 पढ़े लिखे युवकों का गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन से साधु होना,बहनों का भगवान भजना, युवकों का बाहरी दुनिया के बीच कर्मक्षेत्र में रहते हुए भी उससे निःस्पृही रहकर प्रभु की मुर्ति सिद्ध कर लेना.... यह सब गुरुहरि योगीजी महाराज ने पू. काकाजी व पू. पप्पाजी को साथ लेकर कुछ नया कर दिखाने के सूत्र की नवक्रान्तियाँ शुरु करी....और आज दिल्ली में प. पू. काकाजी महाराज के अथाग परिश्रम से निर्मित अशोक विहार स्थित स्वामिनारायण मंदिर अनिर्देश से भी गुरूहरि योगीजी महाराज के इस सूत्र की ओर निगाह रखते हुए पू. गुरुजी ने एक नवक्रांति के रूप में शुरूआत करवाई... सत्संग के आत्मीय स्वजन प.भ. अनुभाई मेहता के सुपुत्र प.भ. परेशभाई का विवाह अनिर्देश के मंदिर की मूर्तियों के समक्ष महापूजा कराके अत्यधिक सादगी से मंत्रोच्चारण के दिव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ। धन्यवाद-धन्यवाद ऐसे गुरु के वचन को अघ्घर झेलने वाले दोनों परिवारों को.....

अत्यधिक गहराई से देखेंगे तो हमें स्पष्ट पता चलेगा कि 214-15 साल पहले भगवान स्वामिनारायण ने सर्वप्रथम सामान्य जनता के बाहरी व आंतरिक आचार-विचार, धर्म, व्यवहार को शुद्ध करने का बीड़ा

उठाया..... तत्कालीन भोली प्रजा भूत-प्रेत, मैली विद्या, जंत्रमंत्र, जादु-टोना, अन्धविश्वास, देवी-देवताओं के समक्ष बली चढ़ाना, सती प्रथा, वर्णाश्रम, जातिभेद, झूठे आडम्बरों में बुरी तरह से फंसी थी। वहां वे प्रभु की मूर्ति का सुख आदि के ज्ञान को तो कहां समझ पाते? सो भगवान स्वामिनारायण सामान्य प्रजा के बीच में स्वयं सामान्य व्यक्ति की तरह रहे..... काठी-दरबारों, चुस्त रूढ़िवादियों को अपने प्रेम में खींचा..... समाज में फैली कुरीतियों, धर्म की आड़ में चल रही ढकोसलेबाजी आदि रीतिरिवाजों में प्रेम की तलवार से ही बदलाव लाने का भरसक प्रयत्न किया। तभी तो आज भी कई लोग भगवान स्वामिनारायण को कुशल समाज सुधारक के रूप में पहचानते हैं..... दूसरी ओर संस्कारी मुमुक्षुओं की चेतना को भी अनेक अनुभव कराके भगवान भजने के संस्कार डाले..... और भगवान स्वामिनारायण की अखंडित परम्परा के वारिसदारों द्वारा आज भी आत्मा की व धार्मिक क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति के साथ-साथ, सामाजिक क्षेत्रों में भी विकास एवं सुधार चालू है।

दिल्ली के आत्मीय स्वजन प.भ. अनुभाई महेता ने पू. गुरूजी के प्रति खूब लगाव के कारण उनके वचन से अपना मन, लोकलाज आदि बाजु में रखकर अपने सुपुत्र प.भ. परेश का विवाह पैसे की फिजुलखर्ची किए बिना सादगी से करके सर्वप्रथम इस क्रॉंति में पू. गुरूजी को साथ दिया..... इससे भी अधिक आश्चर्य कि उनके समधी प.भ. रमेशभाई व परिवार को स्वामिनारायण धर्म का कुछ भी परिचय ना होते हुए भी पू. गुरूजी की आज्ञा शिरोधार्य करके अपनी लड़की की शादी इस रीत से करने हॉं करी। जबकि दोनों पक्षों की खूब सामर्थ्य है कि वे अच्छी तरह से खर्चा करके विवाह कर सकते थे। यूं 28 जनवरी '95 की सुबह अनिर्देश में दोनों पक्ष के उपस्थित करीब 20-20 सदस्यों और थोड़े सतसंगी बंधुओं के बीच चि. परेशभाई का विवाह अत्यधिक सादगी तथापि खूब उमंगमय व दिव्य वातावरण के बीच सम्पन्न हुआ। बम्बई से इस अवसर पर विशेषरूप से पधारे प.पू. काकाजी के पनौते मानसपुत्र पू. वशीभाई ने भव्य महापूजा करके सबको भक्तिभाव में झबो दिए और निष्ठावान पुरोहित प. भ. विनोदभाई द्वारा मंत्रोच्चारण से सारी विधि हुई.... पू. गुरूजी ने दोनों परिवारों पर अपनी अन्तर की प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महापूजा में बात करी-

**योगी बापा अक्षरभुवन में कहते थे कि कुछ नया करके दिखाना है..... दोनों परिवारों ने जो हां करी वह एक खूब बड़ा सत्कर्म हो गया है। सात्त्विक भाव में सादगी से शादी करने वाले कई होंगे, समूहलग्न का आयोजन करनेवाले भी कई होंगे। परन्तु, वह भी सगुण क्रिया है, जब कि-साधु के वचन से यह किया है..... यह सारी क्रिया निर्गुण है.... यह हम आत्मसत्तारूप वर्ते..... पू. काकाजी कहते थे कि सत्पुरुष की आज्ञा से घंटी भी बजाओ तो आत्मसत्तारूप है! सुखी तो हो-परम सुखी होने की ओर दौड़े.....**

सभी ने इस प्रसंग की दिल से सराहना की इतना ही नहीं, प.भ. अनुभाई को कहा भी- **'सही अर्थ में शादी करी इसे ही कहा जाए.... शादी इसी तरह होनी चाहिए।'** इस प्रसंग से कईयों को प्रेरणा मिली कि गुरू के वचन पर चलकर उनके अन्तर की हाश पाना ही जीवन का अंतिम ध्येय है। प.भ. अनुभाई, उनके समधी प. भ. रमेशभाई व परिवारजनों को खूब-खूब धन्यवाद.....

✡✡✡✡✡

# विजयदिन.....पाटोत्सव

1995 नए साल के नए दिनों में हरिभक्तों - साधकों को एक अनुपम सूझ देने - नई दिशा देने 3.2.95 से 5.2.95 तक के मगंलकारी दिन चुनकर प.पू काकाजी का साक्षात्कार दिन मनाने निमित्त अनिर्देश में छोटी शिविर का आयोजन किया गया.....

3 Feb पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन और दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा का दिन.... दोनों अत्यधिक महामंगलकारी स्मृति दिन ! 1952 में इसी दिन गुरु हरि योगी महाराज नें प.पू.काकाजी को 72 घंटे समाधि कराकर साक्षात्कार कराया और.....सारे गुणातीत

समाज को स्वयं जैसी ही विभूति भेंट दी।

3 Feb 95 की सुबह पू. गुरुजी की निश्रा में पू. स्नेहलस्वामी ने महापूजा करी.....सर्वप्रथम पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी, बम्बई से आए योगेश्वर पू. राजूभाई ठक्कर व गृहस्थ सत्संगी भाईयों ने ठाकुरजी की मूर्तियों के चरणार्विंद की चंदन से पूजा की..... पुष्प अर्पण किए, आरती करी। भक्तों के अत्यधिक भक्तिभाव से


Statement about Ownership and other particulars about news paper

**'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'**

(Form IV Rule 8)

| | | |
|---|---|---|
| 1. Place of Publication | : | Yogi Divine Society Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 |
| 2. Periodicity of its Publication | : | Monthly |
| 3. Printer's Name | : | Prabhakar Rao |
| 4. Nationality | : | Indian |
| Address | : | 31-C, Janta flats, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52 |
| 5. Publisher's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 6. Editor's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 7. Owner's Name | : | Yogi Divine Society |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52 |

I, Prabhakar Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

**PRABHAKAR RAO**

Signature of Publisher

Date: 25 Feb, 1995


पाटोत्सव की सारी विधि सम्पन्न हुई

पू. गुरुजी ने इस अवसर पर कहा–**'पू. पप्पाजी आज के दिन को विजय दिन कहते हैं, तो प.पू. काकाजी के साक्षात्कार के प्रकाश में ही जीया करें.....'** शाम को भजन संध्या का कार्यक्रम था। पंजाब से आए प.भ. विनोदभाई, दिल्ली के प.भ. राकेशभाई, प.भ. मंजुल साहब, पू. ऋषिभाई ने भजनों की धूम मचाकर सभी को आंनदविभोर कर दिया।

4 Feb वसंतपंचमी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन एवं महाराज द्वारा शिक्षापत्री लिखने का दिन..... तीनों का समन्वय.... इस निमित्त शीविर की पहली सभा हुई, पू. गुरुजी ने गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज का अनुपम सामर्थ्य, प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन, वसंतपंचमी एवं शिक्षापत्री के बारे में बताते हुए इस दिन की अत्यधिक महिमा बताई और कहा-**'प.पू. काकाजी ने तो रोटी के छोटे - छोटे टुकड़े तक करके नए - नए फार्मूले दिए हैं.... हमें बस चलना है।'** उसके बाद तारदेव के योगेश्वरों द्वारा प.पू. काकाजी के अमृत महोत्सव पर प्रकाशित गुजराती पुस्तक जेवा में निरख्या रे में से पू. कोठारीस्वामिजी, पू. शास्त्रीस्वामिजी वगैरह को पू. काकाजी द्वारा हुए अनुभव पढ़वा कर हिन्दी में निरूपण करके खूब विस्तार से पू. गुरुजी ने बारीक - बारीक चीजें समझाई।

4 की शाम को शीविर की दूसरी सभा चैतन्यजननी प.पू. बा को श्रद्धांजलि देने निमित्त हुई। पू. बा के जीवन कार्य व अपने साथ जुड़े अनेक पुराने प्रसंगों की स्मृति पू. गुरुजी ने की....सभी अन्दर से गद्‌गद् हो गये। इस सभा में भी 'जेवा मैं निरख्या' रे पुस्तक में से पू. घनश्यामभाई अमीन का प्रसंग पढ़वा कर पू. गुरुजी ने स्पष्ट सूझ दी कि हमें स्वरुप की प्रत्येक क्रिया को कैसे निहारना चाहिए..... हमें स्वरुप के पास कैसे पेश आना चाहिए।

5 की सुबह प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन मनाकर शिविर की पूर्णाहुति करी..... इस सभा में पू.

गुरुजी ने पू. दासस्वामी, पू. दिनकरभाई, पू. शांतिभाई सेठ, पू. डॉ. सनंदभाई (ब्रह्मज्योति) के अनुभव प्रसंगों का हिन्दी निरुपण करते करीब तीन घंटे लगातार कथावार्ता की। अनिर्देश में स्थापित प.पू. काकाजी की संगमरमर की मूर्ति जीवंत व चमत्कारी है। यह स्वयं के अनुभव द्वारा विस्तार से बताया। सभी भक्त लोग पू. गुरुजी द्वारा बहाए कथावार्ता के अस्खलित धोध में इतने अधिक आनंद में खो गए थे कि किसी का समय की ओर ध्यान ही नहीं रहा, बल्कि यह विचार आ रहा था कि आज शीविर पूरी हो जायेगी तो शाम से क्या करेंगे? तीन दिन प्रसार होने का किसी को पता ही नहीं चला.....अत्यधिक आनंद, पू. गुरुजी की करूणा के विचार में शीविर की पूर्णाहुति खूब अहोभाव से हुई और सभी ने अपने को हुई स्वरूपों की भव्य प्राप्ति महसूस की व गुणातीत स्वरूपों को दिल में अनंत वंदन किए.....

## व्रतोत्सवसूची

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1**. दि. | 27.2.95 | सोमवार | महाशिवरात्री, व्रत<br>प.पू. काकाजी महाराज का हिन्दी तिथि के मुताबिक अंतिमसंस्कार विधि दिन..... |
| **2**. दि. | 7.3.95 | मंगलवार | प.पू. काकाजी का स्वधामगमन दिन।<br>सांय 7.00 से 9.00 प.पू. पापाजी की निश्रा में अनिर्देश में भजन संध्या। |
| **3**. दि. | 13.3.95 | सोमवार | एकादशी, व्रत |
| **4**. दि. | 16.3.95 | गुरुवार | होलिका दहन<br>ब्रह्मस्वरुप भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन। |
| **5**. दि. | 17.3.95 | शुक्रवार | धूलेन्डी, होली<br>प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन। |

**PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI**
*'ANIRDESH'* Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053